म० प्र० प्रगतिशील लेखक संघ की किताब क्लब योजना के अधीन

तय तो यही हुआ था

स्व० शरद बिल्लौरे

प्रकाशन सहयोग

परिमल प्रकाशन

७४३, मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद-२११००२

□ केवल सदस्यों के लिए

□ स्वत्वाधिकारी : म० प्र० प्रगतिशील लेखक संघ
एम० आई० जी० ६/१७३, सरस्वती नगर, भोपाल

□ प्रकाशन सहयोग : परिमल प्रकाशन
७४३, मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद-२११००२

□ मुद्रक : भार्गव मुद्रण केन्द्र
४/२ बाई का बाग, इलाहाबाद-२११००३

□ आवरण : सुरेन्द्र राजन

□ प्रथम संस्करण : १९८२ ईसवी

भाषा

पृथ्वी के अन्दर के सार में से
फूट कर निकलती हुई
एक भाषा है बीज के अँकुराने की।

तिनके बटोर-बटोर कर
टहनियों के बीच
घोंसला बुने जाने की भी एक भाषा है।

तुम्हारे पास और भी बहुत सी भाषाएँ हैं,
अण्डे सेने की
आकाश में उड़ जाने की
खेत से चोंच भर लाने की।

तुम्हारे पास
कोख में कविता को गरमाने की भाषा भी है।

तुम बीज की भाषा बोलीं
मैं उग आया
तुमने घोंसले की भाषा में कुछ कहा
और मैं वृक्ष हो गया।
तुम अण्डे सेने की भाषा में गुनगुनाती रहीं
और मैं आकार ग्रहण करता रहा।

तुम्हारे आकाश में उड़ते ही
मैं खेत हो गया।
तुमने चोंच भरी होने का गीत गाया
और मैं नन्हीं चोंच खोले
घोंसले में चिचियाने लगा।
तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं
तुम्हारी कोख में गरमाती
कविता की भाषा बोल रहा हूँ।

तब एक कविता लिखी गई होगी

तब
रात्रि के देवता ने करवट ली होगी
और आसमान में
एक साथ हिनहिनाए होंगे
चांदी के घोड़े
तब
एक बैल शरीर झटक कर खड़ा हो गया होगा
और एक ने
सिर्फ हवा को सूंघ कर ही
गरदन नीची कर दी होगी
तब
एक चूल्हा धुंधुआया होगा
और एक लकड़ी
मुंह बिदकाए बिना गुटक गई होगी
लोहे का कसैला स्वाद

तब
एक बीज जमीन में भीतर तक गया होगा
और एक सपना अंकुराया होगा
नींद से एकदम बाहर
तब
एक आदमी ने आकाश की तरफ देखा होगा
और एक औरत
धरती में छुपा आई होगी
अपने बालों का मैल
तब
एक कविता लिखी गई होगी
एक कौआ उड़ा होगा
और एक गाय की पोली दाढ़ में
भर गया होगा
नरम घास का रस।

धरती

दो बरस की नीलू
आसमान तकती है
पापा से कहती है
पापा मुझे आसमान चाहिए।

पापा ने कभी आसमान जैसी चीज
अपने बाप से नहीं माँगी
एक बार तारे जरूर माँगे थे।

पापा डरे हुए हैं सोचते हैं
मैं धरती पर खेल कर बड़ा हुआ
क्या नीलू आसमान ताक कर बड़ी होगी
और यह
कि मैंने अपने बाप से और

नीलू ने मुझसे
धरती क्यों नहीं माँगी

क्या सचमुच धरती
बच्चों के खेलने की चीज नहीं !

[illegible]

कितना निर्मल है
मनु का दो बरस का आस्मान
और कितने बड़े बड़े अक्षरों में
लिखा है मेरा नाम
मनु के दो बरस के आस्मान में
कि जब मैं पढ़ रहा होता हूँ
आस्मान की सम्पूर्णता में
सिर्फ मेरा ही नाम होता है

जब नीलू पढ़ती है
नीलू का नाम
भाभी पढ़ती है
भाभी का नाम
कितना जादुई है मनु का आस्मान

कल हम मनु के आस्मान के लिए

वर्ण मालाओं के बादल लाएँगे
गिनतियों के सितारे
और दुख सुख के चाँद सूरज
कल कितना रंगीन होगा मनु का आस्मान
मैं, नोलू, भाभी
सब होंगे उस आसमान में रंगीन
गड्ड मड्ड
कि पहचान ही नहीं पाएँगे खुद को
एक दूसरे को
कल मनु भूल जाएगी
उसके दो बरस के आसमान पर लिखी
भाषा की पहचान

मुझे चाहिए
मनु का निर्मल आसमान
ताकि मैं उसे अपनी उम्र की खिड़की पर टाँग कर
उस पर लिखा
अपना नाम पढ़ता रहूँ।
ऐसा करते हुए
मेरा समय
हमेशा मुझसे हार जाता है।

ये पहाड़ वसीयत हैं

ये पहाड़ वसीयत हैं
हम आदिवासियों के नाम
हजार बार
हमारे पुरखों ने लिखी है
हमारी सम्पन्नता की आदिम गंध हैं
ये पहाड़।
आकाश और धरती के बीच हुए समझौते पर
हरी स्याही से किए हुए हस्ताक्षर हैं
बुरे दिनों में धरती के काम आ सकें
बूढ़े समय की ऐसी दौलत हैं ये पहाड़।
ये पहाड़ उस शास्वत गीत की लाईनें हैं
जिसे रात काटने के लिए नदियाँ लगातार गाती हैं।
हरे ऊन की स्वेटर
जिसे पहन कर हमारे बच्चे
कड़कती ठण्ड में भी
आखिरकार बड़े होते ही हैं।

एक ऐसा बूढ़ा जिसके पास अनगिनत किस्से हैं ।
संसार के काले खेत में
धान का एक पौधा ।
एक चिड़िया
अपने प्रसव काल में ।
एक पूरे मौसम की बरसात हैं ये पहाड़ ।
एक देवदूत
जो धरती के गर्भ से निकला है ।
दुनिया भर के पत्थर हृदय लोगों के लिए
हजार भाषाओं में लिखी प्यार की इबारत हैं ।
पहाड़ हमारा पिता है
अपने बच्चों को बेहद प्यार करता हुआ ।

तुम्हें पता है
बादल इसकी गोद में अपना रोना रोते हैं ।
परियाँ आती हैं स्वर्ग से त्रस्त
और यहाँ आकर उन्हें राहत मिलती है ।

हम घुमावदार सड़कों से
उनका शृंगार करेंगे
और उनके गर्भ से
किंवदन्तियों की तरह खनिज फूट निकलेगा ।

पत्थर

छेनी और हथौड़े के संघर्ष
सारे वातावरण में
डायनामाइट के धमाकों के बीच
बहुत भीतर तक टूट टूट कर
पत्थर
कितने ज्यादा ऊब गए हैं
हमेशा हमेशा दीवार होते रहने से
पता नहीं कब से पत्थर
दीवार होना नहीं चाहते ।

ठेकेदार की तरह पान खा कर
बिना बात गाली देना चाहते हैं ।
बड़े साहब की मेम की तरह
चश्मा लगाकर छागल से पानी पीना चाहते हैं।
पहाड़ पर बहुत ऊपर तक चढ़कर
साहब की जीप की सीध में

नीचे तक लुढ़क जाना चाहते हैं।
कुल मिलाकर पत्थर
पहाड़ छोड़ देना चाहते है।

कहाँ जाएँगे
पत्थर पहाड़ छोड़कर कहाँ जा सकते हैं
इतने सारे पत्थर नर्मदा में डूबकर
शंकर भगवान भी नहीं हो सकते
सिर्फ छींट का लंहगा पहने
पीठ पर पत्थर बाँधे
पीढ़ी दर पीढ़ी
तम्बाकू का पोक थूकते हुए
पत्थर
पत्थर ही तो फूट सकते हैं
यह फिर दीवार होते रहने से ऊब सकते हैं।

हम जहाँ जा रहे हैं
वे पहाड़ तो बर्फ के हैं।

पेड़

आज जब मैं
अपने टूटने के क्षणों में
पेड़ की टूटती डालियों को महसूस करता हूँ
तो बातें
ज्यादा साफ और तर्कसंगत लगने लगती हैं।
पेड़ जो धरती और आकाश से
बराबर बराबर अनुपात में जुड़ा है
अपनी पत्तियों में आकाश समेटे
जड़ तक पहुँचते पहुँचते
धरती हो जाता है।
हवा, धूप और धूल का
एक जैसा स्वागत करता
चींटियों और चिड़ियों के रिश्ते में बँधा
अपने अस्तित्व के लिए
धरती में उबलते लावे के नजदीक
खड़ा पेड़।

तुम कभी इतिहास के भीतर जाओ
और
किसी आदमी के पेड़ होने की कथा पढ़ो
तो समझना
वह मेरे वंश की उत्पत्ति का युग था।

तय तो यही हुआ था

सबसे पहले बायाँ हाथ कटा
फिर दोनों पैर लहूलुहान होते हुए
टुकड़ों में कटते चले गए
खून दर्द के धक्के खा खा कर
नसों से बाहर निकल आया था

तय तो यही हुआ था कि मैं
कबूतर की तौल के बराबर
अपने शरीर का मांस काटकर
बाज को सौंप दूँ
और वह कबूतर को छोड़ दे

सचमुच बड़ा असहनीय दर्द था
शरीर का एक बड़ा हिस्सा तराजू पर था
और कबूतर वाला पलड़ा फिर नीचे था

हार कर मैं
समूचा ही तराजू पर चढ़ गया

आसमान से फूल नहीं बरसे
कबूतर ने कोई दूसरा रूप नहीं लिया
और मैंने देखा
बाज की दाढ़ में
आदमी का खून लग चुका है।

बच्चा और टिड्डा

बच्चे
टिड्डा पकड़ते हैं दबे पाँव
दौड़ते, थकते, हाँफते
टिड्डे की पूँछ में धागा बाँध उड़ाते हैं।
बच्चे
आसमान में उड़ जाते हैं
थके थके से सारी रात
सोते रहते हैं
माँ की चिंताओं
और बाप के गुस्से से बेखबर।

उड़ते उड़ते टिड्डा
परियों के देश में पहुँचता है।
परियाँ बच्चों का पता पूछती हैं
रात भर टिड्डा और परियाँ
बच्चों को ढूँढते हैं।

माँ बाप के डर से
नींद में भी ठिठक जाते हैं।

सुबह टिड्डा
बच्चों को इशारे करता है
उन्हें दौड़ना और
दबे पाँव आक्रमण करना सिखाता है।

रात टिड्डा
बच्चों को मीठी नींद सुलाने के लिए
आसमान से परियों को लाता है
टिड्डा पकड़ने के आरोप में बच्चे
पिता के हाथों रोज पिटते हैं।
खिड़की पर बैठा टिड्डा
देखता रहता है
दबे पाँव।

तहखाने में

तहखाने में
जिसने भी भीतर जा सकता था गया
चार दादों के जमाने की
बहुत सी चीजें वहाँ दफन थीं
जिनमें किसी आदमकद आइने का जिक्र करते थे
और माँ लोहे की पेटी में बन्द पूजा की पोथियों का
बिना ज्यादा मेहनत किये
दोनों चीजें मिली थीं लेकिन
आइने में सिर्फ इतना पारा शेष था
कि बहुत करीब आकर मुँह देखा जा सके
और पोथियाँ पढ़ने लायक कम
पूजा करने लायक ज्यादा बची थीं।
कुछ भी लाया नहीं हूँ अब सोच रहा हूँ
वहाँ बेकार पड़ी बाँस की सीढ़ी ही ले आता
तो कम से कम छोटा भाई
उसके सहारे बिना खपरैल फोड़े छत पर अटकी
अपनी गेंद को निकाल ही सकता था।

माँ बाप के डर से
नींद में भी ठिठक जाते हैं।

सुबह टिड्डा
बच्चों को इशारे करता है
उन्हें दौड़ना और
दबे पाँव आक्रमण करना सिखाता

रात टिड्डा
बच्चों को मीठी नींद सुलाने के लिए
आसमान से परियों को लाता है
टिड्डा पकड़ने के आरोप में बच्चे
पिता के हाथों रोज पिटते हैं।
खिड़की पर बैठा टिड्डा
देखता रहता है
दबे पाँव।

गुजरना पड़ा है अंगार को
या बीज, अंकुर, पत्ते या तने वाली
तासीर नहीं होती अंगार की
अंगार से हथेलियाँ जल जाती हैं
हथेलियाँ ही नहीं
खेत, खलिहान, घर, गाँव सब कुछ
भस्म हो जाते हैं।

पर छोटे को
अंगार के इतिहास से कोई दिलचस्पी नहीं
उसे मतलब है घाँस-पूस के जल जाने से
आखिरकार
बरसात होने और नई घास उगने से पहले
खलिहान की सफाई बहुत जरूरी होती है
जिसकी पूरी जिम्मेदारी
छोटे पर है।

छोटे की जिम्मेदारी

छोटे ने
पर्याप्त मात्रा में
घॉस फूस इकट्ठा कर लिया है
और ललचाई नजरों से
मेरी ओर देख रहा है .
एक अंगार के लिए।
छोटा
एक अंगार का मुहताज।
अपने बड़े होने का मुहताज छोटा,
थोड़ी ही देर में झुंभलाकर
गुस्से में मुझे न जाने क्या क्या कहता हुआ
खलिहान से बाहर निकल जायेगा
तब कितना मुश्किल होगा
छोटे को
अंगार का इतिहास समझाना
कि लाल होने के लिए
किन किन अवस्थाओं से होकर

गुजरना पड़ा है अंगार को
या बीज, अंकुर, पत्ते या तने वाली
तासीर नहीं होती अंगार की
अंगार से हथेलियाँ जल जाती हैं
हथेलियाँ ही नहीं
खेत, खलिहान, घर, गाँव सब कुछ
भस्म हो जाते हैं।

पर छोटे को
अंगार के इतिहास से कोई दिलचस्पी नहीं
उसे मतलब है घाँस-फूस के जल जाने से
आखिरकार
बरसात होने और नई घास उगने से पहले
खलिहान की सफाई बहुत जरूरी होती है
जिसकी पूरी जिम्मेदारी
छोटे पर है।

साइकिल

ठीक अपने मालिक की ही तरह
उसकी उम्र की गिनती भी
पैदा होने के दिन से नहीं
काम पर आने के दिन से होती है ।

बूढ़े के साथ बूढ़ी
और
जवान के साथ जवान
साइकिल की नींद में हैं
तीन चीज
सड़क
पैर
हवा ।
सड़क की नींद में जूते
पैर की नींद में घाँस
हवा की नींद में पत्तियाँ

साइकिल किसी की नींद में नहीं।
जैसी कि
हमारे घर में अकेली साइकिल
और साइकिल के घर में
हम सब।
अम्मा, बुआ और भाई-बहन
कुल मिलाकर नौ
एक साथ सबको खुश नहीं कर पाती

सिर्फ घण्टी बजने जितनी मोहलत माँ
महराब दार रास्तों में
बार बार भटकी
इतनी इतनी चढ़ाइयाँ
कि सड़क ढली
हवा रुकी
पैर थके
साइकिल नहीं थकी।

जब तक वह घर में है
बापू की यादगार है।

यात्रा : एक :

हम दूर देश की यात्रा पर निकलते हैं
घूमने नहीं
नौकरी करने।
हम निकलते हैं
अपने शहर से बाहर
और
किसी की पूरी जिन्दगी से बाहर निकल जाते हैं,
एकदम जीवित।
रेल में बैठे हुए हम
यात्रा से संबंधित चीजों को छोड़ कर
शेष सब के बारे में सोचते हैं।
कल
जब हमें अपने शहर में नौकरी मिल जाएगी
हम लौटेंगे
छुट्टियाँ बिताने नहीं,
शहर में हमेशा हमेशा को बस जाने के लिए।

तब
क्या हम उस संसार में
उतने ही जीवित लौट पाएंगे
जहां से एक दिन हम
दूर देश की यात्रा पर निकले थे
नौकरी करने के लिए भी
और अपने शहर
हमेशा हमेशा को लौटने के लिए भी।

यात्रा : दो :

मैं लिखूंगा एक दिन
अपनी लम्बी-लम्बी यात्राओं के बारे में।
दूर देशों के बारे में
लिखूंगा जरूर
ढेर की ढेर कविताएँ।
मैं लिखूंगा तब
जब अपने शहर और नौकरी के बारे में
कुछ नहीं सोचकर
यात्रा करता हुआ
मैं सिर्फ
यात्रा के बारे में ही सोचूंगा।

यात्रा : तीन :

विदा के समय
सब आये छोड़ने
दरवाजे तक माँ
मोटर तक भाई
जंक्शन पर बड़ी गाड़ी पकड़ने तक
दोस्त।
शहर आया अंत तक साथ
और लौटा नहीं।

यात्रा : चार :

एक नदी
दो नदी
दस नदी
यात्रा एक
और पार करनी पड़ी अनगिनत नदियाँ।
पहाड़ों और मैदानों की गिनती अलग
खर्च के मद में कुल जमा पाँच दिन।
एक अच्छी नौकरी के लिए
इतना सब बहुत बड़ा
बहुत छोटी योग्यता
और समझदारी की उम्र।

यात्रा : पाँच :

अतुल कहो तो अतुल
रेखा कहो तो रेखा
मनु कहो तो मनु
रेल के जादुई संगीत में
लगातार बजते हैं सोचे हुए नाम।
और आँख बन्द करते ही रेल
विपरीत दिशा में
घर की तरफ दौड़ने लगती है।
कितना साफ दिखता है
रेल में बैठे बैठे
हजारों मील दूर का घर।

यात्रा : छह :

रेल में चढ़ते हुए
अपने सामान के बारे में हम
उतने ही सतर्क होते हैं
जितने कि
बस में चढ़ते हुए
खिड़की के पास वाली सीट के बारे में।
जितने कि
विदा के समय
हाथ हिलाने के बारे में।
जितने कि हम
यात्रा समाप्त करने पर
सतर्क होते हैं।
सपनों के उस संसार के बारे में
हम कभी सतर्क नहीं होते
जहां हमें
भावी डर के बारे में सतर्क करते हुए

ले जाती हैं
रेलें
बसें
और मित्रताएँ।

यात्रा : सात :

बचपन की छुक छुक गाड़ी
देखते देखते हो गई
दैत्याकार और दहाड़ती रेल।
वहां मैं
कभी गार्ड का डिब्बा होता था
कभी इंजन
कभी कण्डक्टर
यात्री कभी नहीं था।
मैं
गुड्डे गुड़ियां फेंक कर
बचपन से बाहर निकला था
छुक छुक गाड़ी में शामिल होने
और उसमें बैठा बैठा ही
बड़ा हो गया।

यात्रा : आठ :

जब हम टी० टी० को लापरवाही से
टिकटें पकड़ा कर
प्लेटफार्म से बाहर निकलते हैं
तब चारों ओर
गर्दन घुमाकर देखते हुए
सोचते जरूर हैं
कि हमारा सहयात्री
अब तक
प्लेटफार्म पार कर गया होगा।

नदी : एक :

मैं बहुत डर गया था नदी के मौन से
नदी को इतना खामोश
पहले कभी नहीं देखा
पत्थर फेंकने पर भी
कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

माँ ने कल से कुछ भी नहीं खाया है।
मैं बूढ़े मछुआरे से पूछता हूँ
काका
क्या कोई निदान है
नदी की खामोशी दूर करने का।
बूढ़ा कहता है
बेटा नदी का मौन बहुत खतरनाक होता है
गाँव के गाँव लील जाती है इसकी चुप्पी
इसे तोड़ने के लिए

यज्ञ करना होता है
नर-बलि देनी होती है।

मैं रात सपने में देखता हूँ
मेरे माथे पर सिन्दूर का टीका खिंचा है
और माँ की थाली में
रोटी रखी है।

नदी : दो :

बहाव की हल्की सी संभावना दिखाई दी
और देखते देखते वहाँ
एक भरी पूरी नदी थी।
नदी
कितने संघर्ष किए हैं मैंने
तुम्हें गति देने के लिए
पर तुम्हें बहते देख कर लगता है
कि मैं तो निमित्त मात्र था
तुम तो स्वयं ही गति थीं।
तुम नदी थीं
तुम्हें लगातार बहते जाना था
ढाल की तरफ से मुड़ते हुए
ज़मीन पर चलते चलते
मैं कितनी दूर तुम्हारा साथ दे सकता था।

तुम पहली बार
उन ईंटों को बहाती हुई मुड़ीं
जो मैंने
अपना घर बनाने के लिए रखी थीं
और फिर मुड़ती चली गईं
ढाल के साथ साथ
मैदान में पहुँच कर
धरती के गर्भ में समा गईं।
मेरे भगीरथ प्रयत्नों को देख कर
शायद तुमने स्वयं को
गंगा समझ लिया था।

आओ मेरे प्यार
हम एक बार फिर से उदगम तक लौट चलें।
अबकी बार मैं तुम्हें
हर ढलान पर खड़ा मिलूंगा
तुम्हारे साथ बह जाने के लिए।

अभी भी तुम्हारी आंखों को देखकर
लगता है
कि कभी वहां नदी रही होगी
मेरे भगीरथ प्रयत्नों की
भरी पूरी नदी।

साँप

कल जिसे आँगन में मार दिया गया था
साँप
रात सपने में आया था
अपना जहर वाला दाँत माँगने
कह रहा था
दूसरी दुनियाँ वालों ने
मुझे साँप मानने से इंकार कर दिया है
वहाँ मेरे साथ न्याय नहीं हो रहा है
मेरा जहर वाला दाँत मुझे लौटा दो
मैं सुबह माँ से पूछता हूँ
साँप के दाँत के बारे में
माँ कहती है
बेटा
इतने छोटे बच्चे के दाँत नहीं होते

अच्छा ही हुआ
जो मैं
अपना दांत मांगने
किसी के सपने में नहीं गया।

साँप

कल जि
साँप
रात सप
अपना ज
कह रहा
दूसरी दु
मुझे साँप
वहाँ मेरे
मेरा जह
मैं सुबह
साँप के द
माँ कहती
बेटा
इतने छो

अच्छा ही हुआ
जो मैं
अपना दांत मांगने
किसी के सपने मे नही गया।

साँप

कल जिसे आँगन मे मार दिया गया था
साँप
रात सपने मे आया था
अपना जहर वाला दाँत माँगने
कह रहा था
दूसरी दुनियाँ वालो ने
मुझे साँप मानने से इकार कर दिया है
वहाँ मेरे साथ न्याय नही हो रहा है
मेरा जहर वाला दाँत मुझे लौटा दो
मै सुबह माँ से पूछता हूँ
साँप के दाँत के बारे मे
माँ कहती है
बेटा
इतने छोटे बच्चे के दाँत नही होते

अच्छा ही हुआ
जो मैं
अपना दांत माँगने
किसी के सपने मे नही गया।

समुद्र-मथन

मै समुद्र मथन के समय
देवताओ की पक्ति मे था
लेकिन बटवारे के वक्त
मुझे राक्षस ठहरा दिया गया और मैने देखा
कि इस सबकी जड एक अमृत कलश है,
जिसमे देवताओ ने
राक्षसो को मूर्ख बनाने के लिए
शराब भार रखी है।
मै वेष बदल कर देवताओ की लाइन मे जा बैठा
मगर अफसोस अमृत पान करते ही
मेरा सर धड से अलग कर दिया गया।
और यह उसी अमृत का असर है
कि मै दोहरी जिंदगी जी रहा हूँ।

दो अधूरी जिंदगी
राहू और केतु की जिंदगी।

जहाँ सिर हाथों के अभाव में
अपने आँसू भी नहीं पोंछ सकता, तो धड़
अपना दुख प्रकट करने को रो भी नही सकता।

दिन रात कुछ लोग मुझ पर हँसते है
ताना मारते हैं
तब मै उन्हे जा दबोचता हूँ।
फिर सारा संसार
ग्रहण के नाम पर कलंक कह कर
मुझे गाली देता है।
तब मुझे अपनी भूल का अहसास होता है
क्योंकि समुद्र मंथन के पूर्व भी
मैं राक्षस ही था
और इस बंटवारे में राक्षसों ने
देवताओं को धोका दिया था
मेरी गलती थी कि मै
बहुत पहले से वेष बदल कर
देवताओं की लाइन में जा खड़ा हुआ था।

मेरे बच्चे

कल मै उन्हे विदा दूँगा
उनकी स्कूल की वर्दी मे
उन्हे सडक पार करा कर लौट आऊँगा।
कल वे गुजरेंगे मेरे घर के ऊपर से
नटखट शैतानियां करते।
मेरे बच्चे आसमान तक जाना चाहेगे
तारे तोड तोड कर
मेरे घर की छत पर
फेंक देना चाहेगे।
आसमान के नीलेपन को
अपनी पाँखो मे भर लेना चाहेगे।
मेरे बच्चे आसमान पर से
मुझे अंगूठा दिखाएँगे।
और मैं कितना खुश हो जाऊँगा।

कल जब वे बड़े हो जाएँगे
आसमानी वस्त्रों मे उतरेंगे
मेरे रोशनदान मे से हाथ हिलाएँगे।
उनके पास बादलो के गुदगुदे अनुभव,
परियो के किस्से,
राजकुमारो के सपने होगे।
वे सुगध की दिशा मे सोचेगे
और हवाओ पर सवार होकर आएँगे।

वे अपने बचपन का इतना सारा सामान
मेरे घर मे सजाना चाहेगे।
और खिची दीवारो को देखते ही
उदास हो जाएँगे।
वे हवाओ पर सवार होगे
और उनका सिर चौखट से टकरा जाएगा।
तब अचानक
बहुत खामोश हो जाएँगे मेरे बच्चे।
मैं न जाने उन्हे किस बात पर झिड़क दूँगा
और उनकी बड़ी बड़ी आँखें
गूँगी हो जाएँगी।
उन्हे अपना आसमान याद आयेगा
और अपने सपने अपंग होते हुए दिखेगे।
धीरे धीरे
मुझ जैसे ही हो जाएँगे बच्चे।
मुझ जैसे ही
दुखी सुखी।

इतने दिनो मे
वे कितने पिछड चुके होगे
कितने टूट चुके होगे
कि जब कभी उन्हे लू या जाडा लगेगा
कि जब कभी उनका जूता फट जाएगा
कि जब कभी
वे अपने मकान की छत पर से
नटखट बच्चो को गुजरते देखेगे
वे आसमान के प्यार मे भीग उठेंगे
और मुझे दोप देगे
मेरे बच्चे
मेरे प्रति घृणा से भर उठेंगे।

मैं गाँव गया था

मैं अभी गाँव गया था
केवल यह देखने
कि घर वाले बदल गए है
या
अभी तक यह सोचते हैं
कि मैं बड़ा आदमी बनकर लौटूंगा

रास्ते के सागौन पीले पड़ गए थे
शायद अपनी पढ़ाई के अंतिम वर्ष मे रहे होगे
उन्हें भविष्य की चिंता रही होगी
मेरा भविष्य
मेरे थैले में है और मेरे गाँव में
बेशरम की झाड़ियाँ और ज्यादा हरी हो गई हैं

मैं खेतों मे जा कर देखना चाहता था
कि कही बीस गुना पैदा करने की कोशिश में
मुझे गेहूँ के साथ तो
बो नही दिया गया है
और मै सचमुच
गेहूँ के बीच उगा हुआ था
अब मेरे लिए
ज्यादा ठहरना ठीक नही था

लौट आया हूँ
पानवाला मामा
कहो कविराज कह कर
मुस्कुरा रहा है।

सब डरते है

ठण्डी गर्मी वर्षा
सबने पूरी पूरी जी
सब ने बोई धान
सभी ने काटी ।
सिर पर गमछा बाँध
खेत मे
सबने अपनी अपनी फसलें नापी
सबकी पैदावार कम हुई
जी भर कर सबने
चिडियों को कोसा।
हलवाहे चरवाहे को
सबने लापरवाह बताया
ढोर डाँगरो को
सबने गाली दी।
साहूकार लाला

जब खाली बोरे लेकर आया
सब खड़े हुए
सबने राम राम की
एक दाने के लिए
नन्ही चिड़िया को
सबने हाथ हिलाकर भगाया ।

सब डरते हैं।

बैल

पूरे दिन
अपने अपने भविष्य को कंधा देने के बाद
शाम आने पर
बैल अक्सर जुगाली करते हैं
और आदमी बातें।

कभी कभी बैल बतियाते हैं
एक दूसरे से
कि आदमी काम करते वक्त
मुड़ मुड़ कर देखता क्यों है ?

दूसरा कहता है
अपनी नाक में रस्सी नहीं होती
तो अपन भी मुड़कर नहीं देखते क्या ?

आदमी की नाक में कौन-सी रस्सी है
कौन खींचता है उसे ?

बैल जब-जब यह बात
आदमी से पूछते हैं
आदमी जुगाली करता है।

दुश्मन

एक दिन
थके हुए बैल के सपने मे
उभरी हुई नसो वाले
दो जवान और मजबूत हाथो ने प्रवेश किया।
बैल गुस्से मे उन्हे मारने दौड़ा
और अपने सीगो मे दबोचकर
दिन भर सुनी हुई गालियाँ
उन्हे वापस लौटाई।
फिर
पुट्ठो पर बने कीलो के निशान गिनवाए।

हथेलियो मे अपने छाले को छिपाकर
बैल की पीठ सहलाई
बैल ने अपनी पीठ पर

उन छालो को फूटते हुए महसूस किया
हाथो ने उसे
अपना आधा खाली पेट दिखाया।
बैल ने उस दिन
अपने हिस्से का आधा भूसा नही खाया ।

दूसरे दिन से
हाथ गाली नही देते
बैल धीमे नही चलता
एक दिन दोनो के सपने में
गांव पटेल प्रवेश करेगा

हाथ उसे दबोच कर
बैल के आगे डाल देंगे
बैल उसे सीगो पर उछाल देगा
फिर
सब मीठी नीद सो जाएँगे।

तीन दिनों से

तीन दिनों से लगातार बरसे है बादल
नन्कू तीन दिनों से आग ताप रहा है
रधिया के चूल्हे के पीछे
तीन दिनों से हँडिया औंधी धरी है
तिलहन और कपास
बहुत खामोश खड़े हैं
उनकी पत्ती के ध्वज आधे झुके हुए है
उनके फूलों के शव तैर रहे हैं तीन दिनों से।
भूखी बछिया खूँटे से ही टंगी हुई है
तीन दिनो से हर आहट पर
बैल खड़े हुंकार रहे हैं।

और बड़े दरवज्जे में
माचिस की तीली, बीड़ी के टोटे

चिलम, चौपड़, हा.. हा....हीं....हो, आल्हा
लगातार है तीन दिनों से।

और अचंभा
गोबर वालों के घर चूल्हा
तीन दिनों से जलता है
रोटी बनती है
बच्चे का भी पेट भरा है।

तीन दिनों से उसका खाविंद
दारू पीता है गाली देता है पटेल को
तीन दिनों से गोबर वाली
पटेल के घर ही सोती है।

गेहूँ

गेहूँ चांस लगे
आंख के कितने पास
कि नत्थू घर में बैठे बैठे
गिन लेता है
पोक
वालियां
दाने
कीमत
कर्जा
बचत।

और मेड़ पर नन्हें की अंगुली थामें चलता है।
गेहूँ की चांस के साथ-साथ
आगे जाता है

बेहद आगे
सोलह सत्रह बरस आगे
नन्हे की शादी होनी है
दुलहन आती है
शक्कर पूरी की पंगत में
मेले होते हैं
गाँव बिरादरी के प्रेमी-जन
सब आते हैं
सब खाते हैं
एक बड़ा उत्सव होना है
यहीं मेड़ पर चलते चलते।

सुई और तागा लेकर के
अब लछमी ने पिरो लिए हैं
मन ही मन गेहूँ के पौधे
बाँध लिए सारे शरीर में
आँख बन्द करती है
सब पानी हो जाता है
सब सोना हो जाता है।
गेहूँ
गप्पू की नस में बहता है
[illegible] है
और [illegible] बोलता है लछमी की बाँह में
है,
[illegible] है
[illegible] है

जडे जमा लेता है लोगों के खयाल में
और वही पलता है।

आसमान जितनी पानी को बूंदे देता है
धरती गिनती है
अण्डो-सा उनको सेती है
और किसी समझौते-सा लौटा देती है।
जितनी बूंदें
उतने दाने।
नदियो मे जितना पानी था
खलिहानो मे उतना गेहूँ।

'फिर भी भूखे गाँव
शहर के कोने भूखे
खुद नत्थू भूखा
छ. महीने तक भूखे घर के लोग।
गेहूँ
नत्थू का, नन्हे का, लछमी का
सगा गेहूँ
खलिहान से बाहर निकलते ही
कागज हो जाता है।
तेल, गुड, नमक, मिर्च, कपड़ा, जूता
कितना कुछ नहीं होना पड़ता गेहूँ को
कोटवार, पटवारी, दरोगा, लेवी
कितने रूप रखता है गेहूँ।

बाकी का
जो नत्थू के घर जाना था
कहाँ गया है
जिससे उसे पेट भरना था
वह गेहूँ कहाँ भरा है
उसे पता है कि
सब जानते हैं
गेहूँ चोंस लगे
आँख के कितने पास
कि नत्थू घर में बैठे-बैठे
गिन लेता है
शादी विवाह
तीज त्योहार
बहन बेटी
एक टेम खाने
और
दोनों टेम भूखे रहने के दिन।

हरिया

हरिया कल रात तेरा खेत
गाँव मे घूम रहा था
बहुत भूखा था।

हरिया कल रात तेरे बैल
कांजो हाउस मे सड़ा भूसा खा रहे थे
बहुत भूखे थे।

हरिया कल रात तेरा लड़का
मुकद्दम के लिए लड़कियां पटा रहा था
बहुत भूखा था।

हरिया कल रात
तेरे आंगन लांघते ही

बहुत भूखा था।

हरिया कल रात से
दिखाई नहीं दी तेरी जवान बेटी।

हरिया
आज रात के लिए
तेरे पास क्या बचा है।

हरिया
क्या आज तुझे भूख नहीं
तू कुछ बोलता क्यों नहीं
हरिया ?

बरसात

एक झल्ला पानी क्या गिरा
कीचड़ से कतराती गली
आँगन मे आ गई
देहरी पर पाँव रखते सहमी
और मुस्कुराकर पानी-पानी होती
नग धड़ग बच्चो की सूरत
दौड़ गई बाखल से बाजार तक,
साँप-सी बल खाती
छोड़ गई कीचड़ की केंचुल।
ओ भैया बादल
देखो ना
मै तो एक इज्जतदार आदमी हूँ।
अबकी बार
यदि तुम जोर से बरस गए
मुई गली मेरे घर मे घुस आएगी

और फिर
टूटी चारपाई और खाली कनस्तरों में कैद
मेरी इज्जत
चौराहे पर तैरेगी।

तब मैं नंग धड़ंग बच्चा
कितनी देर रो सकता हूँ
बरसते पानी में।

गली पहले तो ऐसी नहीं थी
मेरे घर के सामने से निकलती थी
चुपचाप आँखें झुकाए
पर जब से मेरा नया पड़ोसी गोदाम आया है
पहले उसने गली को छेड़ा
फिर एक दिन
रास्ता रोक कर खड़ा हो गया,
और तभी से मोहल्ले मे दबी दबी आवाजें हैं
कि गली के पेट मे
गोदाम पल रहा है।
गली मुझसे कह रही थी
जिस दिन बादल साथ देंगे
वह गोदाम से बदला जरूर लेगी।
बादल बरसेंगे और उमड़ती हुई गुस्सैल गली
गोदाम में जा घुसेगी
और गोदाम की ड्योढ़ी जितना ऊँचा

मेरा घर
यकीनन डूब जायेगा,
यही तो होता आया है
जब जब गलियों ने
गोदामों से बदला लिया है।
छोटी छोटी ड्योढ़ियां
उनकी अवैध सतानें पालती आई है
युगों और शताब्दियों से
निःशब्द।

चिड़िया . एक :

हर उस घडी
जब मै जोर से रो देना चाहता था
आँसुओ को चुराकर
वह फुर्र से उड़ गई थी
और मेरे कलम हाथ मे लेने पर
वह कविता से बाहर
चोच मे चावल की चूरी दाबे
घोसले के किनारे बैठी
भविष्य की सभावनाओ पर
विचार कर रही थी

हर सुबह
रसोई की खिडकी मे
उबासी लेती
बाथरूम के रोशनदान मे गुनगुनाती

हर रात
सपनों पर पंख फैलाए बैठी
चिड़िया हुई वह

जब कभी धूल नहायेगी
पानी जरूर बरसेगा।

चिड़िया : दो :

खिड़की तक आती है
मुझे देखती है, उड़ जाती है
चिड़िया मुझसे क्यों डरती है।

चिड़िया की आँखें है
आँखो मे कोटर हैं
कोटर मे अतीत है
और अतीत मे हस्तिनापुर है
द्रोणाचार्य हैं, पाण्डव हैं
और भी बहुत कुछ है,
शायद महाभारत और गीता भी।
तब चिड़िया की आँखो मे
पाण्डव भी थे अर्जुन भी था
सिर्फ नही था

कि अर्जुन की आँखों मे खाली
चिड़िया की आँखें हैं ।

अपनी आँखें छिद जाने का
सिर्फ उसे अहसास नही था
कुछ बच्चे थे
एक चिड़ा था
एक घोसला
और पेट मे
दानों की खुशबू पाने की बड़ी चाह थी

तो फिर क्या मैं भी अर्जुन हूँ
मेरे भीतर कही
हस्तिनापुर उग आया है
चिड़िया ने कैसे जाना
चिड़िया मुझसे क्यों डरती है ।

कवि : एक :

यदि
किसी अच्छे कवि की
सिगरेट पीकर
अच्छी कविता लिखी जा सकती
तो
बेचारे अच्छे कवि
कपड़े पहनने को तरस जाते।

कवि : दो :

चिडिया पर
कविता लिखो
तो उसमे
पेड़ आते ही हैं

और कवि
तुम पेड़ छू सकते हो
चिड़िया कभी नही
पकड़ सकते।

ग़ालिब को सुनते हुए

आपने मेरे सलाम का
जवाब नही दिया
चचा गालिब
आप इतने उदास क्यूं हैं
एक बात बताइये
आपको मौत से डर नहीं लगता
देखिये
यूं हँस देने से काम नही चलेगा ।

बुरा मत मानना
जितनी देर आप अपनी गज़ल के
एक एक शेर को गुनगुनाते रहे है
उतनी देर
यदि आप अपना पजामा ही धोते
तो शायद

ऐसी उदास गज़लें
लिखने की नौबत ही नहीं आती
वैसे आप तो बड़े शायर हैं
भला बताइये
इस समय
जब मैं
आपको प्रेम करने के गुर
बताने के मूड मे हूँ

आपकी इन गज़लो का क्या करूँ ?

अभी तक

अभी
खिड़की मे बत्ती नही जली
कवि
अभी तक नही आया।
अभी मोहल्ला उदास है
कवि
अभी तक नही आया।
अभी लोग जाग रहे हे
कवि
अभी तक नही आया।
अभी बच्चे
झोली वाले बाबा से डरते हैं
कवि
अभी तक नही आया।
अभी कागज पर अंगूठा लगता है

कवि
अभी तक नहीं आया।
अभी किसान आसमान ताकता है
कवि
अभी तक नही आया।
अभी लोग इंतजार करते हैं
कवि
अभी तक नही आया।

मेरी कहानी

मेरी कहानी
उस संगमरमरी पत्थर की कहानी है
लोग खूबसूरत कहने के बावजूद
जिसे पत्थर कहते है।

उस काली चट्टान की कहानी है
सख्त होने के बावजूद
कोमल पौधे
जिसके सीने पर अपनी जड़ें जमाए रहते हैं।

जब मैं पैदा हुआ
अपनी कोमल कोमल गुलाबी हथेलियों में
दो मुट्ठी धूप मार कर बड़ा हो गया
मैंने अपने सीने पर फसलें उगाईं
भावनाओं के जल से उन्हे सींचा

और पकती बालियों को देख देख
भविष्य का नक्शा खींचा।
लेकिन
जब कभी
फसल काटने की कोशिश की
दानों को
अपने से एक युग आगे बढ़ा पाया।
फिर भी मैं
समय से एक एक टुकड़ा
उधार लेकर बोता रहा
और उस एक युग अंतर को
निरंतर कम करने का प्रयास करता रहा।

लेकिन इस बार,
इस बार दानें तो एक युग आगे है ही
जमीन भी बहुत आगे सरक गई है
युगों और शताब्दियो आगे
उसके सीने मे पड़ी
वे सारी दरारें नार गई है
जिन्हें मै नही नार सका था
मैं जिन्दगी की खाई के इस किनारे खड़ा
उस किनारे पर
उसे मुस्कुराता देख रहा हूँ
दूर........
शायद मेरे अंतर्मन से
ये आवाज-सी आ रही थी

ज़मीन तो उसी की होती है
जो फसल काट लेते हैं
और इस युग मे फसल
बोये बिना काट ली जाती है।

अचानक
मैं पीछे हटता गया
युगों और शताब्दियों पीछे
मेरे हाथ छोटे होने लगे
रंग गुलाबी होने लगा
और एक बार फिर से
गुलाबी हथेलियों मे
दो मुट्ठी धूप भर कर खड़ा हूँ

एक बार फिर से बडा होने की उम्मीद मे।

ताकि मै भी
बिना बोये
किसी की फसल काट सकूँ
और अभी तक चढ़ा हुआ
समय का कर्ज़ उतार दूँ।

और मैं सिगरेट पीता हूँ

यह कविता किसी और दिन लिखी गई थी, लेकिन आज अचानक बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। १८ महीनों के लम्बे इलाज के बाद आज मेडिकल फिटनेस की रिपोर्ट आ गई है, मुझे पूर्ण रूपेण स्वस्थ करार दे दिया गया है अत: अब तो टी० बी० की बीमारी का अहसास भी कभी (कालेज के प्रारम्भिक दिनों में) पूर्ण भावुकता से किए गए (असफल) प्यार अहसास जैसा लगने लगता है, जो कभी कभी किन्ही निजी क्षणो में भीतर, बहुत भीतर कही सालता है और फिर से बीमार होने का मन करता है और मैं सिगरेट पीता हूँ ..... .(डायरी)

वह टी० बी० का मरीज
रात साढे ग्यारह बजे
टी० बी० हास्पिटल के सामने से
सिगरेट पीता गुजरता है
अस्पताल के इतने बड़े बरामदे मे
अकेले जल रहे
चालीस वॉट के बल्ब को देख

मुस्कुराता है
खांसते खांसते
रास्ते ही मे थक जाता है
और घर पहुंचकर
एक गिलास पानी के साथ
एक गोली खा कर सो जाता है
सिगरेट
रातभर
उसके खोखले सीने में
लगातार जलती है
सुबह
वह फिर सिगरेट पीता है
खांसता है
गोली खाता है
उसे यह सब
प्यार करने जैसा लगता है।

रात

•

कंधे पर टँगे थैले से लेकर
बिस्तर तक
कितना कुछ हो गया होता है
रात देर गये
जब हम अपने घरो मे लौटते हैं।
कितना भारी भारी हो गया होता है हमारा घर
तलुओं और पिण्डलियो के भीतर
फड़फड़ाती थकान
और पोर पोर से फूटता दर्द
हमारे ठण्डे खाने को कितना गर्म कर देता है।
हमारे शरीर की चुप्पी
शहर पर कितनी जल्दी छा जाती है
और कितनी नीद मे होती है हमारी चेतना
कि जब हमारी मेडिकल रिपोर्टों में
कुछ भी नार्मल नही होता

तो किसी को भी आश्चर्य नही होता।
हमारे भीतर पनप रहे
किसी गंभीर रोग की चिंता मे
सिर्फ हमारी प्रेमिकाएँ कुछ देर सुबकती हैं
और संबध तोड लेती हैं,
घर की चिट्ठी
राशन कार्ड
और लकडी के सपनो को ओढकर।
जब हम
अपनी फटी पैंट को पलटवाने के बारे मे
सोचते हुए
अचानक सो जाते हैं।
हमारे भीतर पल रहे रोग का चेहरा
उतर जाता है
और हमारे शहर मे
एक सडक
हम लोगो को याद करती हुई
रात भर जागती है।

अब जबकि तुम इस शहर मे नहीं हो

•

हफ्ते भर से चल रहे हैं
जेब मे सात रुपये
और शरीर पर
एक जोड कपडे

एक पूरा चार सौ पृष्ठो का उपन्यास
कल ही पूरा पढा,
और कल ही
अफसर ने
मेरे काम की तारीफ की।

दोस्तो को मैंने उनकी चिट्ठियो के
लम्बे लम्बे उत्तर लिखे
और माँ को लिखा
कि मुझे उसकी खब खब याद आती है।

सवादो के
अपमान की हद पार करने पर भी
मुझे मारपीट जितना
गुस्सा नही आया

और बरसात मे
सडक पार करती लडकियो को
घूरते हुए मैं झिझका नही

तुम्हें मेरी दाढी अच्छी लगती है
और अब जबकि तुम
इस शहर मे नही हो
मैं
दाढी कटवाने के बारे मे सोच रहा हूँ।

तुम मुझे उगने तो दो

आखिर कब तक तलाशता रहूँगा
सभावनाएँ अंकुराने की
और आखिर कब तक
मेरी पृथ्वी
तुम अपना गीलापन दफनाती रहोगी,
कब तक करती रहोगी
गेहूँ के दानो का इतजार
मैं जगली घास ही सही
तुम्हारे गीलेपन को
सबसे पहले मैंने ही तो छुआ है
क्या मेरी जडो की कुलबुलाहट
तुमने अपने अतर मे महसूस नही की है

मुझे उगाओ मेरी पृथ्वी
मैं उगकर

कोने कोने फैल जाना चाहता हूँ
तुम मुझे उगने तो दो
मैं
तुम्हारे गेहूँ के दानों के लिए
शायद एक बहुत अच्छी
खाद साबित हो सकूँ।